केवल निजी वितरण के लिए

ECHOES
INDIA

श्री राम चंद्र मिशन

मई २०१४ खंड ७, अंक ३

पूज्य बाबूजी महाराज का ११५ वाँ जन्मोत्सव – २९ एवं ३० अप्रैल तथा १ मई २०१४

डी.जे.पार्क, तिरुप्पुर

उत्सव की तैयारियाँ कई सप्ताह पूर्व ही आरम्भ हो गयी थीं। उत्सव के पिछले सप्ताहान्त पर, जब अभ्यासियों का काफ़ी संख्या में समारोह स्थल में पहुँचना प्रारम्भ हो गया, तो वहाँ का वातावरण एक शान्तिपूर्ण उल्लास एवं आशा से भरने लगा।

ध्यान कक्ष में

ध्यान कक्ष को सुन्दर ढंग से सजाया गया था और बाबूजी महाराज की एक विशाल अनुकृति मंच को शोभायमान कर रही थी। ध्यान कक्ष में रखे गये विशाल एल.सी.डी. स्क्रीन से मंच पर चल रही गतिविधियों को, वहाँ उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति को, निकट से देखने में अत्यन्त सहायता हो रही थी। अभ्यासियों को काफ़ी मात्रा में पानी पीने के लिये कहा जा रहा था ताकि वे गर्मी के कारण निर्जलीकरण से दुष्प्रभावित न हों और इस हेतु स्वयंसेवक उन्हें आवश्यकतानुसार पेयजल उपलब्ध करा रहे थे।

तिरुप्पुर में आयोजित तीन दिवसीय उत्सव के दौरान भाई कमलेश पटेल द्वारा कुल आठ सत्संग कराये गये, क्योंकि पूज्य गुरुदेव अस्वस्थ होने के कारण चेन्नई में ही रहे। इन सत्संग द्वारा लगभग १५००० अभ्यासी, जो भन्डारे में उपस्थित थे, के हृदयों को जीवन्तता एवं अनुभव की गहराई प्राप्त हुई। २९ अप्रेल को सत्संग के बाद मार्च २०१४ में प्राप्त कुछ विशेष व्हिस्पर्स संदेश पढ़े गये। इन संदेशों में भाई कमलेश पटेल की गुरुदेव के उत्तराधिकारी के रूप में पूर्ण अनुमोदन एवं पुष्टि की गयी थी।

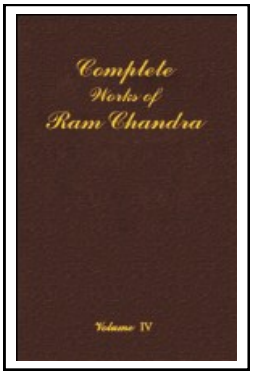

२९ अप्रैल की प्रात: बच्चों के द्वारा अनेक नवीन प्रकाशनों का विमोचन किया गया। इसके उपरान्त भाई कमलेश पटेल द्वारा 'रामचन्द्र की सम्पूर्ण कृतियां, भाग ४' नामक पुस्तक के विषय में एवं उन व्यक्तियों, जिन्होंने इस भाग के संकलन में अपना योगदान दिया था, के बारे में बताया गया।

"बाबूजी हमें आशीष दें कि हम इस 'मार्ग' का त्रुटि रहित, बिना भटके और इस संदेशों में दृढ़ आस्था के साथ, पूर्ण आत्म विश्वास, सम्पूर्ण मानवता के प्रति प्रेम सहित अनुसरण करें और समस्त सृष्टि के प्रति प्रेम में विकसित हों।"

– पा. राजगोपालाचारी

पुस्तक के इस भाग में बाबूजी महाराज द्वारा समय–समय पर विभिन्न अभ्यासियों को लिखे गये पत्र एवं उनके अनेक लेख, जो कि इससे पूर्व केवल हिन्दी भाषा में प्रकाशित हुए थे, सम्मिलित किये गये हैं। काफ़ी अधिक गर्मी होने के बावजूद अभ्यासी उक्त कार्यक्रम के पूरा होने तक ध्यान कक्ष में बैठे रहे।

३० अप्रैल को प्रात: ६ बजे के सत्संग के बाद कमलेश भाई द्वारा छह विवाह सम्पन्न कराये गये। कुछ समय के अन्तराल के बाद पूज्य गुरुदेव चेन्नई से वीडियो लिंक द्वारा एल.सी.डी. स्क्रीन पर दिखाई दिये। चेन्नई में गुरुदेव की पौत्री माधुरी कृष्णा द्वारा पढ़ा गया व्हिस्पर्स सन्देश एवं पूज्य गुरुदेव द्वारा दी गयी वार्ता का सीधा प्रसारण उपस्थित अभ्यासियों ने सुना। यह सुविधा श्री राम चन्द्र मिशन के विश्वभर में स्थित केन्द्रों के लिये भी उपलब्ध थी।

३० तारीख की शाम दिन भर की तेज गर्मी के बाद जब सायंकाल की ठण्डी हवा बहने लगी तो बहन रंजना द्वारा गाये भजनों ने सभी को पूज्य गुरुदेव की याद से जोड़े रखा।

अन्य गतिविधियाँ

आंचलिक प्रभारी, केन्द्र प्रभारी एवं आश्रम प्रबन्धकों की बैठक आयोजित की गयी, साथ

ही अन्य समूहों एवं स्वयं सेवकों द्वारा भी अपने–अपने कार्यों के सम्बन्ध में चर्चा आयोजित की गयी।

बच्चों एवं युवाओं के केन्द्र द्वारा तीन आयु समूहों के लिये विभिन्न गतिविधियाँ आयोजित की गयीं। उस स्थान को चमकीले रंगों वाले कागज को मोड़ कर बनाये गये आठ हज़ार से अधिक 'शान्ति के प्रतीक सारस पक्षी' से सजाया गया था। विभिन्न भाषाओं के नये प्रकाशनों की घोषणा के कार्य में भाई कमलेश की सहायता करने हेतु बच्चों का चुनाव एक लकी ड्रा के माध्यम से किया गया। इस भण्डारे में लगभग २५०० बच्चों ने अपना पंजीकरण कराया था।

एक मुख्य बड़ी केन्टीन के अतिरिक्त तीन अन्य केन्टीन की भी व्यवस्था की गयी थी, ताकि अभ्यासियों को अधिक दूरी तक चलना न पड़े। भण्डारे के सुचारु संचालन के लिये की गयी विभिन्न व्यवस्थाओं में भोजन–ालय, आवासीय शामियाने के अतिरिक्त मिशन का इतिहास दर्शाने वाले स्टाल, फ़ोटो गेलरी तथा टी–शर्ट स्टाल आदि भी सम्मिलित थे। मास्टर्स कॉटेज के निकट एक मौन क्षेत्र बनाया गया था जिसने मालिक की याद से परिपूरित उचित वातावरण का निर्माण किया।

वार्तायें

भाई कमलेश ने भण्डारे के दौरान उपस्थित अभ्यासियों को तीन बार सम्बोधित किया। उन्होंने नियमित साधना की आवश्यकता पर ज़ोर दिया तथा बाबूजी महाराज की शिक्षाओं को दोहराया। १ मई को अपनी समापन वार्ता में उन्होंने कहा कि एक कारक जो प्रगति को सदा धीरे कर देता है वह है – इच्छाएँ। उन्होंने आगे कहा कि ध्यान और सतत्–स्मरण के अभ्यास से हमें उस स्थिति को पाने का प्रयास करना चाहिए जहाँ इच्छाएँ हमें कभी प्रभावित न करें। जिन संयोजकों और स्वयं–सेवकों की सहायता से यह भंडारा एक विशाल उत्सव बन सका, उन सभी को धन्यवाद देते हुए उन्होंने कहा,"वे सभी आत्माएँ (अभ्यासी) जो अनाम रूप से सेवा करते रहती हैं उन्हें आश्वस्त रहना चाहिए कि उनकी नियति उनके (गुरुदेव के) कोमल हृदय से जुड़ी हुई है।

मणपाक्कम आश्रम में

३५०० से अधिक अभ्यासी मणपाक्कम आश्रम में उपस्थित थे। ध्यान–कक्ष के प्रवेश द्वार को आकर्षक रंगोली तथा फूलों से सजाया गया था। २९ तथा ३० अप्रैल और १ मई को गुरुदेव ने ध्यान–कक्ष में सुबह का ध्यान कराया। दिन के समय वे विभिन्न देशों से आए अभ्यासियों से मिले।

३० अप्रैल को गुरुदेव ने प्रात: ६:०० बजे अपने कॉटेज में प्रसाद अर्पित किया। वे प्रफ़ुल्लित और ओजस्वी लग रहे थे। सत्संग के पश्चात मणपक्कम तथा तिरुप्पुर में भंडारा वाले स्थान के बीच सीधा वीडियो सम्पर्क स्थापित किया गया। बहन माधुरी कृष्णा ने ३० अप्रैल का व्हिस्पर्स सन्देश पढ़ा। उसके पश्चात गुरुदेव ने एक संक्षिप्त वार्ता दी। उन्होंने हाल ही में प्राप्त व्हिस्पर्स सन्देशों की ओर इंगित करते हुए दोहराया कि इन सन्देशों में मिशन की निरन्तरता के विषय में आश्वासन दिया गया है; लेकिन हमें वर्तमान में स्वयं पर ध्यान देना चाहिए और भविष्य को भविष्य के लिए छोड़ देना चाहिए। उन्होंने कहा," मैं फिर दोहराता हूँ कि हमें वर्तमान समय का लाभ उठाना चाहिए जिस में हम आज हैं, जिस वर्तमान समय में प्रकृति ने हमें पहुँचाया है और मिशन में भाग लेने का अवसर दिया है। हमें निडर होकर बिना किसी पूर्वाग्रह, घृणा या निन्दा के सभी के प्रति प्रेम रखते हुए आगे बढ़ना है और मिशन का लाभ उठाना है। इन सब विषयों पर बात करना बहुत आसान है किन्तु उन्हें व्यवहार में लाना बहुत कठिन है।" फ़िर गुरुदेव ने बहन मन्दना के साथ जन्मदिन का एक केक काटा और इसे बाबूजी महाराज को अर्पित किया।

"यदि हम विकसित हो रहे हैं तो हमें यहाँ भी विकसित होना चाहिए। यह यहीं से शुरू होता है और वहाँ पर समाप्त हो जाता है। और यह कैसे शुरू होता है? हमारे हृदयों में बढ़ते हुए हल्केपन से, हमारे द्वारा बिना किसी पूर्वाग्रह के, बिना किसी घृणा के मानवता को गले लगाने की बढ़ती हुई प्रवृत्ति से।"

पा. राजगोपालाचारी

मणपाक्कम से समाचार

फरवरी २०१४

गुरुदेव 'गायत्री' में: ५ से १४ फरवरी

तिरुवल्लुर की जमीन पर चिकित्सा केन्द्र के निर्माण की शुरुआत ५ फरवरी को करने की योजना बनाई गई थी। गुरुदेव स्वयं यात्रा करने की स्थिति में नहीं थे अत: उन्होंने भाई कमलेश पटेल और पी. आर. कृष्णा को भेज दिया। सुबह ११ बजे के लगभग गुरुदेव एक मॉल में गये, कुछ नाश्ता खरीदा और फिर वे 'गायत्री' चले आये जो कि उनके परिवार के लिए एक आश्चर्य की बात थी। यद्यपि उनकी योजना आश्रम वापस आने की थी, लेकिन उन्होंने अपना इरादा बदला और 'गायत्री' में ही ठहरने का निश्चय किया।

कानपुर आश्रम के निर्माण का उद्घाटन

रविवार, ९ फरवरी

गुरुदेव काफ़ी जल्दी तैयार हो गए थे, किन्तु अभी भी अच्छा महसूस नहीं कर रहे थे। फिर भी उन्होनें वीडियो लिंक पर कानपुर के अभ्यासियों का स्वागत किया और अभ्यासियों ने प्रेम एवं गर्म जोशी के साथ इसका उत्तर दिया। गुरुदेव उसी क्षण तरो-ताज़ा हो गए और उन्होंने वहाँ उपस्थित समूह को सम्बोधित किया। उन्होंने बुनियाद कार्य के सम्बंध में ईंटें रखने आदि के बारे में निर्देश दिए। उन्होंने अभ्यासियों से बात की, प्रोजेक्ट के विवरण के बारे में पूछा और कहा, "मैं आपके लिये यहाँ से सत्संग शुरु करूंगा और आप सब वहाँ पर ध्यान कर सकते हैं"। इसके बाद, गुरुदेव गायत्री के हॉल में आये और सभी एकत्रित अभ्यासियों को सत्संग कराया। यह एक घन्टे का सत्संग था, जिसके बाद गुरुदेव एकदम थक गए थे और वे आराम करने के लिए अंदर चले गए।

इस बीच भाई कमलेश ने आश्रम में कुछ विवाह सम्पन्न कराये।

यूरोपीय प्रशिक्षक सेमिनार: १५ से २० फरवरी २०१४

गुरुदेव १५ फरवरी को पहले सत्र का उद्घाटन करने के लिए मणपाक्कम आए। उन्होनें 'डॉर्म-ए' में एकत्रित प्रशिक्षकों को सत्संग कराया और इसके बाद कार्य में सुधार के बारे में वार्ता दी। गुरुदेव ने कहा कि जब हम प्रशिक्षक के कार्य से प्रेम करने लगते हैं तो कार्य में और अधिक सुधार होते जाता है और यह अधिक प्रभावी बन जाता है। उन्होंने इसके अनेक उदाहरण दिये। जब गुरुदेव 'गायत्री' वापस जा रहे थे तो उन्होंने समूह को प्रत्येक शाम छोटे टुकड़ों में उनसे मिलने आने का निमंत्रण दिया।

अन्तर्राष्ट्रीय छात्रवृत्ति प्रशिक्षण कार्यक्रम (आई.एस.टी.पी)

१५ फरवरी को गुरुदेव ने आई.एस.टी.पी. के सभी प्रतिभागियों और समन्वयकों को अपने साथ दिन के भोजन पर आमंत्रित किया। स्कौलर्स को प्रमाणपत्र वितरित करने के बाद, गुरुदेव ने यह सुनिश्चित किया कि प्रत्येक ने प्लेट में भोजन परोसलिया है और फ़िर आंगन में उन सभी के साथ खाना खाया। बाद में उसी शाम वे 'गायत्री' चले गये।

रविवार, १६ फरवरी

गुरुदेव ने सुबह लगभग ६० अभ्यासियों को, जो कि 'गायत्री' में उपस्थित थे, सत्संग कराया। इसके बाद वे थक गए और कुछ उपचार के लिए अंदर चले गए।

शाम के समय प्रशिक्षक सेमिनार के लगभग ६० अभ्यासी 'गायत्री' आए। गुरुदेव उनके साथ हॉल में बैठे और सबको नाश्ता कराया गया। प्रारम्भ में यह एक मौन सत्र था, फिर एक बहन ने वायलिन बजाया और जब उसने वाद्ययंत्र के कम्पन के बारे में बताया तो गुरुदेव ने कहा, "हर चीज कम्पन है"। जब बहन ने संगीत का एक अंश समाप्त किया तो गुरुदेव ने उससे बजाते रहने को कहा। इसके बाद कुछ अभ्यासी आगे आए और उन्हें कुछ पत्र, उपहार आदि दिये।

मालिक ने अपनी यूरोप की यात्राओं को याद करते हुए विभिन्न

भाषाओं के बारे में चर्चा की और उन्होंने बताया कि कैसे कुछ भाषायें, विशेषकर स्केन्डिनेवियन भाषा, सीखने में बहुत कठिन हैं।

यह क्रम पूरे सप्ताह भर चला: अभ्यासी गुरुदेव से मिलने सुबह के समय आते थे और वह शाम को य–ूरोपीय प्रशिक्षकों से मिलते थे, जो ५०–६० के समूहों में होते थे।

रविवार, २३ फ़रवरी

मालिक का स्वास्थ्य अच्छा न होने की वजह से अभ्यासियों से अनुरोध किया गया था कि वे 'गायत्री' न जायें; फ़िर भी बहुत सारे अभ्यासी वहाँ पहुँच गये । मालिक ने करीब १ घंटे १० मिनट की लम्बी पूजा दी; जिसके बाद वे काफ़ी थक गये थे, लेकिन फ़िर भी अन्दर जाने से पहले वे कुछ लोगों से मिले।

२४–२८ फ़रवरी

मालिक की तबीयत इन दिनों ऊपर–नीचे हो रही थी । गुरुवार की रात उनके पोते भार्गव दिल्ली से आये और अगले तीन दिनों तक मालिक काफ़ी प्रसन्न रहे ।

मार्च २०१४

' गायत्री' में मालिक: १–९ मार्च

मार्च के प्रथम सप्ताहांत में भार्गव का 'गायत्री' में रुकना पूज्य मालिक में एक सुखद परिवर्तन लाया। पूरे परिवार ने उनके साथ समय बिताया । २ मार्च, शाम के समय भार्गव दिल्ली वापस चले गये ।

भार्गव के दिल्ली जाने के बाद पूज्य मालिक गायत्री में एक सप्ताह और रुके । वे काफ़ी शांत एवं प्रसन्न थे और अच्छा महसूस होने पर सत्संग भी करवा रहे थे । उन दिनों बहुत ज्यादा आगन्तुक भी नहीं थे और यह पूज्य मालिक के लिये ताजगी प्रदान करने वाला था । सप्ताह के अंत तक वे वापस मणपाक्कम जाने को तैयार थे।

मणपाक्कम में वापसी: सोमवार, १० मार्च, २०१४

पूज्य मालिक 'गायत्री' में एक माह रुकने के बाद मणपाक्कम वापस आ गये थे । उनके स्वास्थ्य में धीरे–धीरे पर स्थिर सुधार हो रहा था और वे आराम से इधर–उधर घूम सकते थे । आश्रम में आने के बाद मालिक ने गोल्फ़–गाड़ी से चक्कर लगाया और लोगों से मिले तथा निर्माण की गतिविधियों का जायजा लिया । वे सिटिंग देने और अभ्यासियों से मिलने को काफ़ी तत्पर थे तथा उन्होंने साथ ही साथ आश्रम के प्रशासनिक कार्य भी देखे । जब भी वे कॉटेज के बाहर बैठते, अभ्यासियों का समूह उनको घेर कर बैठ जाता था।

मालिक द्वारा सत्संग: रविवार, १६ मार्च, २०१४

पूज्य मालिक प्रात: ६ बजे तक तैयार हो गये थे और बोले कि वे उस दिन अच्छा महसूस कर रहे थे । एक अभ्यासी ने बताया कि उस दिन होली थी। गुरुदेव के चेहरे पर चमक आ गयी और वे बोले कि आज वे सत्संग करवायेंगे । मालिक ने एक घंटे से अधिक समय तक सत्संग कराया और फ़िर कॉटेज वापस आ गये ।

गीता सत्र

भाई संस्कृत कन्नन द्वारा गीता के अन्तिम (१८ वें) अध्याय पर प्रवचन आज संपन्न होना था । अपने डेढ़ घंटे के सत्र में उन्होंने गीता के इस अध्याय के श्लोकों की विवेचना की, जिसमें भगवान कृष्ण के उपदेशों का सार "सब कुछ छोड़ कर मेरी शरण में चले आओ" था । मालिक इस सत्र को बड़े मनोयोग से देख रहे थे। क्योंकि अध्याय पूरा नहीं किया जा सका था, अत: इसे अगले सप्ताह के लिये बढ़ा दिया गया।

गृह–प्रवेश: बुधवार, १९ मार्च २०१४

गुरुदेव द्वारका अपार्टमेन्ट्स (आश्रम के पीछे) में गृह प्रवेश के समारोह के लिए आए। वे सीधे ऊपर गए; उस परिवार के लोगों को, जो उस घर में वास करने जा रहे थे, बुलाया और उन्हें प्रसाद दिया, तत्पश्चात सत्संग कराया। क़रीब ४०० अभ्यासी सत्संग के लिए एकत्रित हुए थे। गुरुदेव ने अपनी पहिएदार कुर्सी में घर का चक्कर लगाया, घर में कुछ समय बिताया और फ़िर एक मंज़िल नीचे भाई कमलेश के घर चले गए।

भाई कमलेश का घर: १९ से २५ मार्च २०१४

गुरुदेव ने वहाँ कुछ दिन ठहरने का निश्चय किया। हमेशा की तरह अभ्यासी सुबह और शाम के समय आते। गुरुदेव अपने नाश्ते के उपरान्त सिटिंग देते थे और शाम को, अपने फिज़ियो–थिरेपी सत्र शुरु होने के समय तक, एकत्रित हुए लोगों से मिलने के लिए बाहर कक्ष में आते। यह क्रम रविवार तक चलता रहा।

रविवार की सुबह, भाई कमलेश के सत्संग कराने हेतु आश्रम जाने के बाद, गुरुदेव नीचे आए और उन्होंने उपस्थित लोगों के लिए सत्संग कराया। एक लंबी सिटिंग के बाद गुरुदेव थके हुए नज़र आए और उन्हें साँस लेने में भी कठिनाई महसूस हो रही थी।

गीता सत्र: रविवार २३ मार्च २०१४

चूँकि गुरुदेव भाई कमलेश के घर में थे, उनके लिए आश्रम के ध्यान कक्ष में हो रहे गीता सत्र को देखने हेतु वीडियो सुविधा का संयोजन किया गया। यह नि–योजित कार्यक्रम का अन्तिम भाग था, और यद्यपि गुरुदेव स्वस्थ नहीं थे, वे इस कार्यक्रम में पूर्णतया लीन थे।

अन्त में यह घोषणा की गयी कि एक अतिरिक्त सिंहावलोकन सत्र किया जायेगा जिसमें गीता के सभी अध्यायों का समावेश होगा तथा बाद में प्रश्नोत्तर होंगे।

गुरुदेव अस्वस्थ: २३ से ३१ मार्च, २०१४

गुरुदेव अभी भी अस्वस्थ महसूस कर रहे थे इसलिए कुछ परीक्षण किए गए और उपचार शुरु हुआ। गुरुदेव कॉटेज को लौट आना चाहते थे किन्तु कमज़ोर होने के कारण उन्हें वहाँ ले आना कठिन था। उन्हें ताक़त जुटाने में कुछ दिन लगे और मार्च २५ तक गुरुदेव कॉटेज वापस आ गए।

अप्रैल, २०१४

गुरुदेव अप्रैल के दो सप्ताहों के दौरान अस्वस्थ रहे। चिकित्सकों का एक दल कॉटेज में मौजूद था। आगन्तुकों को पूर्णतया रोक दिया गया था। उचित रोग निदान तथा निर्धारित दवा के सेवन के बाद गुरुदेव ने धीमे किन्तु स्थिर सुधार के लक्षण दिखाने शुरु किए। औषधि सेवन की वजह से वे काफ़ी निद्रालु रहे और बहुत आराम करते रहे। जब वे बेहतर महसूस करने लगे तो उन्होंने कुछ समय के लिये बाहर आना और कॉटेज के सामने या बाबूजी के मण्डप के सामने आकर बैठना शुरु किया।

बरोडा से तीन बहनें अपने परिवारों सहित गुरुदेव से मिलने आईं। गुरुदेव उन्हें मिलकर अतीव प्रसन्न थे और उन्होंने उनके साथ काफ़ी समय व्यतीत किया।

अपने अनौपचारिक वार्तालाप में गुरुदेव ने कुछ बिन्दु सामने रखे:

"वास्तविक शक्ति सदा कोमलता में निहित होती है। केवल दुर्बल ही कठोर होते हैं।"

"बाहर दिखाई देने वाला बदलाव सिर्फ़ बर्ताव में और चरित्र–सुधार में नज़र आता है।"

"जैसे जैसे काम कम होता जाता है, ज़िम्मेदारी बढ़ती जाती है।"

तमिल नव वर्ष: १४ अप्रैल २०१४

गुरुदेव सुबह काफ़ी जल्दी जाग गए थे और उन्होंने कुछ अभ्यासियों का स्वागत किया। उन्हें ध्यान कक्ष में सत्संग का संचालन करना था किन्तु उन्होंने अचानक बहुत थकान महसूस की और सत्संग को रद्द करने का निश्चय किया। उस दिन वे ज़्यादा अभ्यासियों से नहीं मिल सके।

विशु, केरल नव वर्ष: १५ अप्रैल २०१४

गुरुदेव बाहर आँगन में आए जहाँ केरल से क़रीब ८० अभ्यासी और चेन्नई से कुछ मलयाली 'विशु' मनाने के लिये एकत्रित हुए थे।

मालिक ने अभ्यासियों को 'विशुकन्नी', जिसमें विशु दिवस के दिन प्रथम दृष्टया देखी गयी शुभ वस्तुऐं जैसे फल, सब्जियॉ, फूल, एक धातु का दर्पण व सिक्के सम्मिलित हैं, सजाने की अनुमति दे दी। इसके बाद मालिक ने एक सिटिंग दी, और फ़िर कृष्णा भाई ने मलयालम भाषा में एक छोटी वार्ता दी। विशुकन्नी की वस्तुओ में दर्पण देख कर उन्होनें कहा कि जब हम दर्पण में देखते हैं, हमें अपने हृदय में मालिक को देखना चाहिये। इसके उपरांत मालिक ने विशु कैनीत्तोम (जो पारंपरिक तौर पर परिवार के वरिष्ठों द्वारा परिवार के अन्य सदस्यों को दिया जाता है) को वहाँ एकत्रित सभी भाई व बहनों को दिया।

रविवार, २० अप्रैल २०१४

मालिक ने ध्यान कक्ष में सत्संग करवाया। वे प्रात: ७:१० बजे कक्ष में आ गये थे और दस मिनट से भी ज्यादा समय तक अभ्यासियों की धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करते रहे थे। सत्संग के बाद मालिक ने तीन शादियाँ करवाईं। जब घोषणायें की जाती हैं, औपचारिक तौर पर उद्घोषक को अन्त में यह कहना होता है, "जब तक मालिक ध्यान कक्ष से चले नहीं जाते आप सभी कृपया अपनी जगह पर ही बैठे रहें।" यह घोषणा करने में उस समय चूक हो गयी थी, इसलिये मालिक ने भाई प्रकाश को बुलाया और उनको कहा कि वह यह घोषणा करें। कॉटेज में पहुँचने के बाद मालिक ने कुछ समय तक गीता पाठ सुना और फिर वे आराम करने चले गये।

गल्फ सेमिनार: २५–३० मार्च २०१४

मध्य–पूर्व देशों से आये करीब ४०० अभ्यासियों और १०० बच्चों ने इस सेमिनार में भाग लिया। दिनांक २५ को कमलेश भाई ने सुबह ९ बजे का सत्संग करवाया और साधना के महत्व पर एक अद्भुत वार्ता देकर इस सेमिनार का उद्घाटन किया। प्रत्येक दिन सुबह के कार्यक्रमों में एक वार्ता होती थी व शाम के कार्यक्रम में विभिन्न विषयों पर प्रस्तुतियाँ होती थी। समापन सत्र में २९ तारीख को कमलेश भाई ने सेमिनार के प्रतिभागियों को व्यवस्थित साधना की आवश्यकता पर सम्बोधित किया और "एग्रेगोर" शब्द का यह मतलब समझाया, "एग्रेगोर" एक सामूहिक स्पन्दन की अवस्था है, जिसके द्वारा एक अधिक जागृत मानव जाति का आविर्भाव हो सकता है और एक बेहतर दुनिया बन सकती है। ३० तारीख को डाक्टर की सलाह के विपरीत तथा ज्वर एवं कमजोरी होने के बावजूद, मालिक सत्संग के बाद सभी अभ्यासियों से मिले।

यूरोप के प्रशिक्षकों का सेमिनार, मणपाक्कम: १५ से २० फरवरी, २०१४

यूरोप के लगभग सभी देशों से आये करीब ३१० अभ्यासियों ने इस सेमिनार में भाग लिया जो उन्हें स्वयं के भीतर एक गहरे चिंतन स्थल में ले गया। मालिक परिष्करण के बारे में बोले। उन्होंने बताया कि कैसे सृजनता के क्षेत्र में कार्य या प्रयास करने वाले मास्टर्स को अनुभव प्राप्त करने की आवश्यकता होती है तथा अपने कार्य के प्रति लगाव होना जरूरी है, ताकि वे बहुत बारीक व सटीक स्तर की आवश्यक विभेदन क्षमता प्राप्त कर सकें। उन्होंने लापरवाह रवैये से बनाई व प्यार और समर्पण से बनाई वस्तुओं के बीच की विषमताओं को भी समझाया।

अन्य वार्ताओं में भाई कमलेश ने यह याद दिलाया कि, लालाजी अपने व्यवहार में सब लोगों को अपने से भी अधिक प्यार करते थे और किस तरह से बाबूजी अति परिष्कृत स्तर की चेतना व संवेदनशीलता लिये हुए थे। प्रशिक्षकों ने भी छोटे समूहों में यह चर्चा की कि किस तरह उनकी धार्मिक पृष्ठभूमि सम्भवत: अभी भी उनको प्रभावित करती है।

सभी ने यह महसूस किया कि एक पुरानी पेन्टिंग को मूल अवस्था में लाने के लिये जिस सूक्ष्मता, कुशलता व सावधानी की आवश्यकता होती है, उसी तरह से मालिक ने भी उन सभी को प्रेरित किया था। सहज मार्ग में हमारे पास एक भटके हुए व निराश व्यक्ति को उसकी मूल दिव्य अवस्था में लाने की महान संभावनायें हैं।

"जब मनुष्य की आँखें अपने भीतरीस्व की ओर मुड़ती हैं, तभी वह असली मानव बनता है। इसीमें असलियत की वास्तविक खोज निहित है। जोइस से जुड़ जाता है, वह ऐसे क्षेत्र में अपने कदम जमा लेता है, जहाँ से हर चीज अपने आप उतरी थी। दूसरे शब्दों में वह अपना सम्बन्ध असलस्रोत से जोड़ लेता है। उसके बाद केवल उस स्थिति का विस्तार बाकी रह जाता है, जिसके लिये निर्धारित अभ्यास पर्याप्त है।"

बाबूजी महाराज
रामचंद्र की संपूर्ण कृतियाँ – भाग २, पृष्ठ ५९

संदेश का फैलाव

अहमदाबाद, गुजरात

एक अभ्यासी द्वारा चलायी जा रही संस्था 'भारतीय योग संस्थान' द्वारा संचालित योग कक्षाओं में सम्मिलित व्यक्तियों के लिये ७ मार्च की सायं ५.३० बजे जौगर्स पार्क में 'स्वस्थ जीवन के लिये खुश रहिये' कार्यक्रम आयोजित किया गया।

डा० विनोद अग्रवाल व भाई भद्रेश ने 'ध्यान का महत्व', 'मानव जीवन में गुरु की भूमिका' और 'सहज मार्ग के प्रमुख तत्वों' पर चर्चा की। नब्बे प्रतिभागियों में से चालीस ने मिशन में रुचि प्रकट की और बहुतों ने कई प्रश्न पूछे, जिनका प्रशिक्षकों द्वारा समाधान किया गया।

तादिपत्री, जिला अनन्तपुर, आन्ध्र प्रदेश

मार्च में कडपा व तादिपत्री के अनेक कालेजों में आयोजित कुछ खुले सत्रों को जबर्दस्त प्रतिक्रिया मिली। २७५ से अधिक छात्रों ने ध्यान शुरु करने में रुचि दिखायी, जिनमें से १७० ने शुरुआत की। इन इच्छुकों में से १२० तादिपत्री इंजीनियरिंग कालेज से थे। छात्रों को शुरुआत कराने के लिये आन्ध्रप्रदेश के विभिन्न हिस्सों से लगभग बीस प्रशिक्षक एकत्रित हुए। प्रशिक्षकों व स्वयंसेवकों, जिन्होंने इन सत्रों का संचालन किया था, ने अनुभव किया कि इन इच्छुकों में से बहुत से तैयार थे और मालिक का कार्य प्रकट हो रहा था। तादिपत्री के एक कालेज के प्रबंधन

ने अपने परिसर में शुरुआती सिटिंग आयोजित कीं और बुधवार के दिन नियमित सत्संग संचालित करने के लिये एक कक्ष भी आबंटित कर दिया। बहुत से १८ वर्ष से कम के छात्र जो अभ्यास शुरु करना चाहते थे, उम्र की सीमा के कारण निराश हुए।

कडपा

कडपा में एक दंत चिकित्सा, इंजीनियरिंग, व पी.जी.कालेज के साथ –साथ एक स्थानीय बैंक व एक योग केंद्र में पाँच खुले सत्रों का आयोजन किया गया। कुछ खुले सत्रों की प्रतिक्रिया, विशेष रुप से कालेजों में, इतनी अच्छी थी कि लगभग पचास छात्र सहज मार्ग में अपना अभ्यास जल्दी ही शुरु करेंगें। एक अन्य खुला सत्र आश्रम परिसर पुलिवेंदुला, जिला कडपा में संचालित किया गया। इस सत्र की प्रतिक्रिया भी अच्छी थी। वेम्पल्ले, पुलिवेंदुला, कडपा, ताडिपत्री, हैदराबाद से प्रशिक्षकों और आर.टी.पी.पी., कादिरी से कुछ अभ्यासियों ने सिटिंग्स में सहायता की।

कोरुतला और मेतपल्ली केन्द्र, उत्तरी आन्ध्र प्रदेश

भाई मधु कोथपल्ली (अंचल प्रभारी) और उनकी टीम ने जगित्याल के स्थानीय प्रशिक्षक के साथ उत्तरी अंचल, आन्ध्र प्रदेश में अपनी यात्रा के दौरान जगित्याल के ५ कि.मी. परिधि में कोरुतला व मेतपल्ली में दो नये केन्द्रों का शुभारम्भ किया। वापस लौटते हुए यह टीम एक चाय की दुकान पर रुकी और मालिक की कृपा से नये केन्द्रों की स्थापना के लिये प्रार्थना की। एक महीने के भीतर भाई मनचाला कृष्णा ने इन केन्द्रों में खुले सत्रों का आयोजन किया। भाई कृष्णाराव ने कोरुतला में सहज मार्ग के बारे में समझाया और बीस व्यक्तियों ने शुरुआती सिटिंग ले ली। मेतपल्ली में दस नये अभ्यासियों का स्वागत करते हुए भाई सिंगमाराजू ने पद्धति के बारे में बताया। इसी उत्साह के साथ जगित्याल, करीमनगर, कोठागुडम और सिद्दिपेट में अधिक संख्या में खुले सत्र आयोजित किये गये। लगभग १०० नये

अभ्यासियों ने शुरुआती सिटिंग्स लीं। हमेशा की तरह एक सच्ची प्रार्थना ने वास्तव में कार्य किया।

पालक्कड, केरल

पालक्कडआश्रम से लगभग २५ कि.मी.दूर वडावन्नूर में नायर सर्विस सोसायटी में बहन श्यामला मेनन ने एक खुला सत्र संचालित किया। कुछ अभ्यासियों के साथ तेईस व्यक्तियों ने कार्यक्रम में भाग लिया। भाई कृष्णन के.टी. (केन्द्र प्रभारी) 'धर्म और आध्यात्म' पर बोले और मानव जीवन में आध्यात्म के महत्व को विस्तार से समझाया।

भाई मुरलीधरन एम. ने "मानव जीवन का उद्देश्य" विषय पर एक वार्ता दी तथा लक्ष्य प्राप्ति में आध्यात्मिकता की भूमिका के बारे में बताया। तत्पश्चात प्रश्नोत्तर सत्र का आयोजन किया गया ।

खड़गपुर , पश्चिम बंगाल

८ मार्च को खड़गपुर के निकट, टाटा हिताची के रूपनारायणपुर स्थित संयंत्र के ७५ कर्मचारियों के लिये दो घंटे का ध्यान जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम का संयोजन बहिन श्रीलता ने किया तथा बहिन चन्द्र कान्ता अरोरा, भाई सी.एस.आर. मूर्ति, बी.बी.बेरा और अन्य स्वयंसेवकों ने इसका संचालन किया। वक्ताओं ने सन्तुलित जीवन की जरुरत एवं महत्व को समझाया और बताया कि आध्यात्मिकता सन्तुलित जीवन को प्राप्त करने में कैसे मदद कर सकती है। उन्होंने पद्धति का संक्षिप्त में वर्णन किया। सभी को खड़गपुर केन्द्र का भ्रमण करने के आमन्त्रण के साथ सत्र का समापन हुआ, ताकि सभी निर्मल आध्यात्मिक वातावरण का अनुभव कर सकें।

मैसूर, कर्नाटक

भाई ए.पी.दुरई (संयुक्त सचिव) ने फ़रवरी में कर्नाटक पुलिस अकादमी, मैसूर का दौरा किया । उनके भ्रमण के दौरान १६ एवं १७ फ़रवरी को दो खुले सत्रों का आयोजन किया गया। कुल मिलाकर १२० प्रशिक्षु उप-निरीक्षकों ने इनमें भाग लिया, जिसमें से ३३ प्रशिक्षुओं को प्रारम्भिक सिटिंग दी गयी। शेष सभी प्रशिक्षुओं एवं कुछ कर्मचारियों को अप्रैल के अन्त तक प्रारम्भिक सिटिंग दे दी जायेगी। प्रशिक्षु अगले ८ महीने तक अकादमी में रहेंगे और नियमित रविवारीय सत्संग एवं व्यक्तिगत सिटिंग की व्यवस्था उनके परिसर में ही की गयी है। प्रशिक्षण पूरा होने के बाद उनको कर्नाटक के विभिन्न हिस्सों में तैनात किया जायेगा। मैसूर क्षेत्र के आठ प्रशिक्षकों ने इस कार्यक्रम में सहयोग दिया।

तमिलनाडु

१६ से २१ मार्च तक अपनी यात्रा के दौरान भाई ए.पी. दुरई (संयुक्त सचिव) ने तमिलनाडु के तन्जावुर, तूतुकुडि एवं तिरुनेल्वेलि जिलों में कई केन्द्रों का दौरा किया, अभ्यासियों के साथ बातचीत की और खुले सत्रों के आयोजन किये।

भाई सुब्रमणीयन एवं मुरुगरासन (प्रशिक्षकों) ने तन्जावुर से १५ किलोमीटर दूर सरकारी चीनी मिल के कर्मचारी क्लब में एक सत्र का आयोजन किया, जिसमें परिवार सहित ३० कर्मचारियों ने भाग लिया। पाँच लोगों ने तुरंत ही प्रारम्भिक सिटिंग ले ली। तन्जावुर के वेट्री आई.ए.एस. अध्ययन केन्द्र के लगभग ८० छात्रों के समक्ष भी सहज मार्ग का प्रस्तुतिकरण किया गया।

वी.ओ.सी. कॉलिज आफ़ एजुकेशन, तूतुकुडि में १२० अध्यापक प्रशिक्षुओं ने सत्र में भाग लिया तथा स्पिकनगर के निकट मुथियापुरम में बीस महिलाओं ने वार्ता को सुना और पाँच लोगों ने सिटिंग प्रारम्भ किया।

श्रीवैकुन्ठम में खुले सत्र का स्थल के.जी.एस. कॉलेज ऑफ़ आर्ट्स था। वडक्कन्कुलम में अरुल कॉलेज आफ़ इंजीनियरिंग और राजा कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन के छात्र सत्रों में उपस्थित हुए।

एक भ्रमण कार्यक्रम तिरुचेन्दूर और उडन्गुडि के बीच कचनाविलाई स्थित सरवाइट कान्वेंट स्कूल में रखा गया, जिसमें सिस्टर आक्विलीना (प्रशिक्षक) ने ईशु की शिक्षाओं से सहज मार्ग अभ्यास तक परिवर्तन विषय पर एक वार्ता दी। उनकी पाँच सिस्टर नन्स (ईसाई साधवी) ने प्रारम्भिक सिटिंग लेकर अभ्यास शुरु किया ।
उडंगुडि उप-केन्द्र में भाई मुतुकृष्णा के घर पर आयोजित खुले सत्र के बाद पाँच लोगों ने प्रारम्भिक सिटिंग लीं और वडाकंगलम में दस अतिथियों ने आश्रम में आयोजित खुले सत्र में भाग लिया। जोनल प्रभारी भाई रामनाथन तथा स्थानीय प्रशिक्षकों बहिन मीरा शंकर और भाई रामदास, नलयिरम, कृष्णाराजन ने इस कार्य में सहयोग किया ।

राजामुंदरी, आँध्रप्रदेश

१४ अप्रैल को, श्रीकाकुलम, विजयानगरम, विशाखापटनम, पूर्व और पश्चिम गोदावरी ज़िले से आँध्रप्रदेश के तटीय क्षेत्र (ज़ोन) के २२ प्रशिक्षक राजामुंदरी के नए आश्रम में एकत्रित हुए। कार्यक्रम भाई एम. आदिनारायण ज़ोनल केंद्र प्रभारी के मार्गदर्शन में, मालिक की वार्ता – सिटिंग कैसे दी जायें – की वीडियो से आरंभ हुआ। इस के उपरान्त सत्संग किया गया। ज़ोनल केंद्र प्रभारी ने कहा कि मालिक की सेवा करने हेतु वे एक बेहतर प्रशिक्षक और बेहतर कार्यकर्ता बनें। उन्होंने मिशन की गतिविधियों में युवाओं और बच्चों को आकर्षित करने, प्रोत्साहित करने और उसमें सम्मिलित करने के उद्देश्य से कार्यकलापों की रूपरेखा बनाई। कुछ भाईयों ने प्रशिक्षकों द्वारा बेहतर कार्य करने तथा बच्चों की गतिविधियों के लिए उपयोगी सुझाव दिये, जिन्हें सफलतापूर्वक प्रयोग में लाया गया था। प्रशिक्षकों के मध्य व्यक्तिगत सिटिंग आयोजित की गईं और प्राप्त अवलोकन का आदान प्रदान किया गया। 'ऐसोटैरिक सिंबल' से सम्बन्धित 'व्हिस्पर्स' संदेश का एक सैट पढ़ने और चिन्तन करने के लिए वितरित भी किया गया। यह सम्मेलन प्रभावकारी और लाभदायक रहा और इसकी समाप्ति सत्संग के साथ हुई।

जसवंतगढ़, नागौर ज़िला, राजस्थान

६ अप्रैल को, जसवंतगढ़, लाडनन, डिडवाना और सुजानगढ़ के केंद्रों और नज़दीकी गाँवों से लगभग ९० अभ्यासी असावा अतिथिगृह में एकत्रित हुए। कार्यक्रम भाई विकास (ज़ोनल केंद्र प्रभारी) और भाई अनिल (जोधपुर) के द्वारा निर्देशित किया गया। सत्संग के पश्चात मालिक की वीडियो दिखाई गयी, तदोपरांत नाश्ता दिया गया। एक भजन के बाद

'सत्य का उदय' के एक अध्याय का ऑडियो चलाया गया। उसके बाद अभ्यासियों को चार समूहों में बाँटा गया और चलाई गई ऑडियो पर प्रश्न पूछे गए। अगली प्रश्नोत्तरी 'सहज मार्ग के मूल तत्व' पर आधारित थी। इस दौरान कई अभ्यासियों ने व्यक्तिगत अनुभवों से संबंधित अपने प्रश्नों का स्पष्टीकरण प्राप्त किया।

अहमदाबाद, गुजरात

कृषक पृष्ठभूमि के भाई बहनों के एक समूह ने अड़ालज आश्रम, अहमदाबाद के पिछवाड़े में शाकवाटिका में स्वैच्छिक कार्य करने के लिये एक टीम का गठन किया। यह कार्य इस विचार के साथ शुरू किया गया कि अभ्यासियों को – नाममात्र कीमत पर – कीटनाशक रहित शुद्ध, ताजी और जैविक शाक–सब्जी, उपलब्ध कराई जाए। यह शाक–सब्जियाँ आश्रम की रसोई में भी रविवार और अन्य अवसरों पर उपयोग में लाई जाती हैं। बच्चों को इन स्वयंसेवकों के मार्गदर्शन में इन सब्जियों को उगाने का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। स्वयंसेवकों के कठिन परिश्रम के कारण ही आश्रम के पास अब एक सुसज्जित शाक–वाटिका है।

वरणगाँव, महाराष्ट्र

६ अप्रैल को, वारणगाँव, भूसावल, खिरड़ी, दीपनगर, जलगाँव और धूले से ५५ अभ्यासी अर्द्ध दिवसीय कार्यक्रम में उपस्थित हुए। 'दस उसूलों' और चरित्र निर्माण पर एक संवादात्मक और शैक्षिक सत्र आयोजित किया गया, जिसके बाद 'ए रेयर अपरच्यूनिटी' वीडियो दिखायी गयी।

ओपन हाऊस और बच्चों के कार्यक्रम भी आयोजित किए गए। तदोपरांत सहज मार्ग साधना पर अनौपचारिक वार्ता तथा नियमित अभ्यास द्वारा विचारों को सरल एवं प्रभावशाली तरीके से सकारात्मक दिशा में ले जाने में इसकी भूमिका पर चर्चा हुई।

सूरत, गुजरात में मूल्य आधारित शिक्षा

दिनांक १२ अप्रैल को सूरत केन्द्र ने मूल्य आधारित शिक्षा प्रारम्भ करने हेतु रेडिएन्ट इंग्लिश अकादमी, उमरा, पिपलोद में 'शिक्षा में नैतिक मूल्यों की आवश्यकता' विषय पर अभिभावकों का अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया। १२० अभिभावकों, विद्यालय के प्राचार्य, न्यासी एवं स्टॉफ ने सत्र में भाग लिया। स्पिरिचुअल हाइरार्की पब्लिकेशन ट्रस्ट (एस.एच.पी.टी.) द्वारा मूल्य आधारित शिक्षा पर कक्षा ९ के स्तर के विद्यार्थियों के लिए नवीन पाठ्यक्रम जून २०१४ से मार्च २०१५ तक प्रारम्भ किया जाएगा। इस कार्यक्रम के प्रति अभिभावकों की प्रतिक्रिया पूर्ण सकारात्मक रही। कुछ लोगों ने ऐसे कार्यक्रम अभिभावकों के लिए भी करने का आग्रह किया, क्योंकि उन्होंने महसूस किया कि बच्चों के भविष्य निर्माण में अभिभावकों का महत्वपूर्ण योगदान होता है।

यू–कनेक्ट–जयपुर, राजस्थान

यू–कनेक्ट का प्रथम अभिविन्यास कार्यक्रम आर्कपॉइन्ट कन्सल्टेन्ट्स प्राइवेट लिमिटेड, जयपुर में आयोजित किया गया। दस प्रतिभागियों द्वारा, संकाय सदस्यों एवं सहभागियों के परिचय के साथ इसका शुभारम्भ हुआ। वक्ता डॉ० आशीष जौहरी ने समूह के लिए 'नियम' बनाने हेतु प्रतिभागियों को आमन्त्रित किया, जिनका आगामी १६ सत्रों तक उन्होंने पालन करना था। तत्पश्चात वक्ता ने जंगली बतख की कहानी सुनाई, जिसने प्रतिभागियों को जीवन में सही कार्य सही समय पर करने की आवश्यकता पर चिन्तन करने की प्रेरणा दी। कहानी के पश्चातसहभागियों से कुछ प्रश्न पूछे गए, जिससे उनमें आध्यात्मिक विकास का विचार उत्पन्न हो। भाई आशीष ने उदाहरणों एवं प्रश्नों के द्वारा आध्यात्मिक जीवन शैली अपनाने की आवश्यकता पर बल दिया। सत्र पारस्परिक संवाद का था तथा प्रतिभागी इसमें सहभागिता कर प्रसन्न दिखाई दिए।

स्वयंसेवकों के लिए सत्र, मुम्बई

दिनांक १९ फरवरी को लगभग ४० अभ्यासी, बहन शुभदा नायक के उदयगिरि, मुम्बई स्थित आवास पर एकत्र हुए। भाई मोहनदास हेगड़े ने कथनों, चुटकुलों और निजी अनुभवों के दृष्टान्तों द्वारा मिशन में स्वयंसेवकों के कार्यों के बारे में बताया। उन्होंने सुझाव दिया कि हमें मालिक के प्रति वाहिका होने की आवश्यकता है तथा हमें सेवा के द्वारा प्रेम विकसित करना चाहिये। उन्होंने प्रस्ताव रखा कि समन्वय तथा समितियों का गठन इसको प्रारम्भ करने के लिये एक मंच हो सकता है। उन्होंने सुझाव दिया कि समूह में एक अथवा अधिक स्वयंसेवकों को एक माह के भीतर प्रत्येक सहभागी से निम्न प्रश्न उनके सम्मुख रखते हुए पूछना चाहिये: मैं एक श्रेष्ठ अभ्यासी कैसे बन सकता हूँ, मुझे और अच्छी सेवा करने हेतु क्या करना आवश्यक है तथा क्या मैंने ऐसा करना प्रारम्भ कर दिया है?

श्रीनगर

दिनांक २८ से ३१ मार्च तक जम्मू केन्द्र के एक दल ने श्रीनगर भ्रमण किया तथा ग्रुप सेन्टर, सी.आर.पी.एफ.कैम्प, बादामी बाग में ध्यान और सफाई पर जी.आई.टी.पी. की इकाई सम्पन्न कराई। यहाँ यह पहला कार्यक्रम था, क्योंकि श्रीनगर एक अशान्त क्षेत्र है जहाँ कर्फ्यू और बन्द रोज़मर्रा की घटनायें हैं।

लगभग ३५ अभ्यासी इसमें सम्मिलित हुए। अधिकांश प्रतिभागी सी.आर.पी.एफ. के लोग थे, जो भारत के सभी क्षेत्रों से आए थे। जोन ११–ए प्रभारी, जम्मू के भाई सुरेन्द्र शर्मा ने इस कार्यक्रम की अध्यक्षता की। जम्मू के भाई जुगल किशोर (प्रशिक्षक) तथा अश्वनी ठाकुर ने यह जी.आई.टी.पी. कार्यशाला सम्पन्न कराई।

युवा सत्र

भीलवाड़ा, राजस्थान

फ़रवरी के अंतिम रविवार को, सुबह के ध्यान के बाद, करीब बारह युवा अभ्यासियों नें एक विशेष सत्र में भाग लिया। एक बहन ने लालाजी के जन्मोत्सव में दिये गये भाई कमलेश पटेल के भाषण, दैनिक जीवन में अपना व्यवहार कैसे सुधारें, के अंश प्रस्तुत किये। तत्पश्चात अभ्यासियों ने सहज मार्ग से जुड़ने के बाद उनके व्यवहार में आये परिवर्तनों को परस्पर साझा किया। जिन अभ्यासियों ने साधना में होने वाली परेशानियों का ज़िक्र किया उन्हें 'सहज मार्ग के मूल तत्व' पुस्तक पढ़ने की सलाह दी गई और व्यक्तिगत सिटिंग के समय अपने प्रशिक्षक से चर्चा करने को कहा गया।

युवाओं की एक अन्य बैठक ३० मार्च को आयोजित की गयी। नये अभ्यासियों को भंडारों की अवधारणा से अवगत कराया गया। जो अभ्यासी भंडारे में पहले भाग ले चुके थे, उन्होंनें अपने अनुभव बताए। बाबूजी के जन्म दिवस पर स्थानीय उत्सव की तैयारियाँ भी शुरु हुई और विभिन्न कार्यक्षेत्रों की शुरुआती योजना पर चर्चा की गयी। अभ्यासियों ने विभिन्न स्वैच्छिक कार्यों के लिये अपना नाम पंजीकृत कराया।

वाराणसी, उत्तर प्रदेश

वाराणासी केन्द्र में १२ से १४ अप्रैल तक आठ प्रशिक्षकों, पाँच फ़सिलिटेटर, दस स्वयंसेवक और बारह युवा प्रतिभागी अभ्यासियों के साथ एक तीन दिवसीय सेमिनार आयोजित किया गया। सर्वप्रथम, सभी को व्यक्तिगत सिटिंग दी गई। सेमिनार में 'प्यार और अनुशासन','आज्ञाकारिता', 'सेवा', 'मालिक की स्वीकार्यता', 'दस नियम' और 'सहज मार्ग में युवाओं की भूमिका' पर वार्तायें हुईं। साथ ही 'आध्यात्मिकता क्यों?' और विभिन्न संस्थाओं और न्यासों जैसे एल.एम.ओ.आई.एस, सी.आर.ई.एस.टी., एस.एम.एस.एफ़., एस.एच.पी.टी और रिट्रीट सेंटरों पर प्रेजेन्टेशन दिये गए।

प्रत्याशियों को मिशन की पुस्तकें दी गई और उन्हें दिये गये विषयों को प्रस्तुत करने को कहा गया। उन्होंनें 'जीने की कला', 'अभ्यास ही हमें पूर्ण बनाता है', 'प्रेम की शुरुआत घर से होती है' और 'सब्र का फ़ल मीठा होता है' पर लघु नाटिकायें प्रस्तुत की। उसके बाद के दो घन्टे स्वैच्छिक सेवा में लगाये गये। कार्यक्रम में मालिक की कुछ वार्ताएं, 'स्वर्णिम मौन' और सामूहिक ध्यान को भी सम्मिलित किया गया। अन्त में प्रतिभागियों ने सत्र के बारे में अपने अनुभवों का आदान प्रदान किया।

जोन प्रभारी का मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश का दौरा

१३ अप्रैल को, भाई अशोक गर्ग (जोन प्रभारी) ने मुरादाबाद आश्रम का दौरा किया। सत्संग के बाद उन्होंने भण्डारों में शामिल होने की आवश्यकता और सहज मार्ग साधना के महत्व पर ज़ोर दिया। बाद में उन्होंने प्रशिक्षकों की एक बैठक की अध्यक्षता की और उनके साथ केन्द्र के विकास हेतु भविष्य की योजनाओं की चर्चा की। उन्होंने आश्रम प्रबन्ध समिति की बैठक में भी भाग लिया और सभी प्रश्नों के जवाब दिये, साथ ही आश्रम के रखरखाव के लिये महत्वपूर्ण सुझाव भी दिये।

जोन प्रभारी दक्षिणी तमिलनाडु – मनमदुराई का दौरा

२३ फ़रवरी को मनमदुराई, शिवगंगाई, कराईकुडी, परमाकुडी और रामानाथपुरम केन्द्रों के करीब १३० अभ्यासियों के साथ मनमदुराई में एक पूर्ण दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया। सत्संग और नाश्ते के बाद अभ्यासियों को सात समूहों में बाँटा गया। प्रत्येक समूह को सहज मार्ग साधना के तत्वों – ध्यान, सफ़ाई, प्रार्थना, सेवा, मालिक से प्रेम, चरित्र निर्माण इत्यादि में से एक विषय दिया गया। चर्चा के बाद, प्रत्येक समूह में से एक अभ्यासी ने पूरे समूह के विचारों को प्रस्तुत किया।

भाई रामानाथन ने कहा कि अभ्यासियों को सहज मार्ग के सिद्धांतों को स्पष्ट रूप से समझना चाहिये और अपना जीवन सादा और प्राकृतिक रूप मे जीना चाहिये, जैसा कि मालिक चाहते हैं।

बच्चों ने नाटक और कुछ दिलचस्प कार्यक्रम जो सर्वप्रथम तिरुप्पुर में, वर्ष २०१३ के बाबूजी के जन्मोत्सव के दौरान बाल केन्द्र में दिखाये गये थे, प्रस्तुत किये।

दोपहर के भोजन के बाद, करीब एक घन्टे तक चले प्रश्नोत्तर सत्र ने अभ्यासियों के दिलों में सहज मार्ग की समझ को गहरा किया। कार्यक्रम का समापन शाम के सत्संग से हुआ।

रायचूर – कर्नाटक

बैंगलूर के भाई वेंकट राव की टोली ने "मिशन के साहित्य को पढ़ने का महत्व" विषय पर ५ और ६ अप्रैल को रायचूर, गुलबर्गा, शोरापुर, गोगी और कुछ दूसरे केंद्रों से आये करीब १०० अभ्यासियों के लिए रायचूर आश्रम में दो दिन का कार्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम दोनों ही दिन प्रात; ७.३० बजे सत्संग के साथ शुरू हुआ। इस कार्यक्रम में कई वार्तायें, प्रश्नोत्तर सत्र, संवादात्मक सत्र, बुझौवल व अन्य क्रि याकलाप रखे गए और यह शाम के सत्संग के साथ समाप्त होता था। डा० गजेंद्र सिंह (अंचल प्रभारी, उत्तरी कर्नाटक) पूरे कार्यक्रम में उपस्थित रहे और उन्होंने समय–समय पर अपने महत्वपूर्ण विचार प्रस्तुत किये। सारे अभ्यासियों को लगा कि इस कार्यक्रम से उनको बहुत लाभ मिला और उन्होंने अपनी प्रसन्नता भी व्यक्त की। ऐसा ही कार्यक्रम जून के अंतिम सप्ताह में गुलबर्गा आश्रम में भी आयोजित करने की योजना है।

खड़गपुर, पश्चिम बंगाल

नौ मार्च को खड़गपुर केंद्र में पैंतीस नये अभ्यासियों के लिए एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। गुरुदेव की वार्ता का एक वीडियो, जिसमे उन्होंने भौतिक चीज़ों के संग्रह करने के स्थान पर अपने लक्ष्य को प्राथमिकता देने पर बल दिया था, चलाया गया। अभ्यास से सम्बन्धित कई संदेहों को दूर किया गया। कुछ अभ्यासियों से कहा गया कि वे विस्तार से बतायें कि अपनी दैनिक साधना को वे किस प्रकार से करते हैं। देखा गया कि वे निर्धारित पद्धति से अभ्यास नहीं कर रहे थे। उन्हें पुन: अभ्यास की सही विधि बतायी गयी। प्रार्थना, ध्यान और सफ़ाई विषयों को 'सहज मार्ग अभ्यास' नामक पुस्तक से अंग्रेज़ी और बंगाली में पढ़ा गया और फिर उसे हिंदी में अनुवाद भी किया गया। बहन चंद्रकांता ने हिंदी में प्रार्थना, ध्यान, सफ़ाई, सत्संग और भंडारे के बारे में प्रस्तुतिकरण दिया। सत्र, चाय और नाश्ते के साथ सम्पन्न हुआ ।

नए प्रकाशन

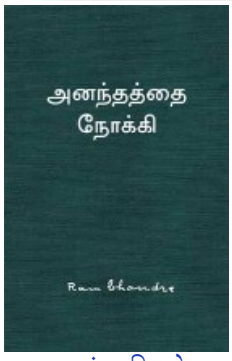

अनंत की ओर
तमिल

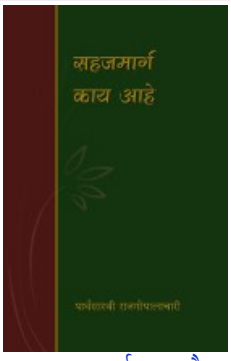

सहज मार्ग क्या है
मराठी

वे कहते हैं, भाग ५
हिन्दी

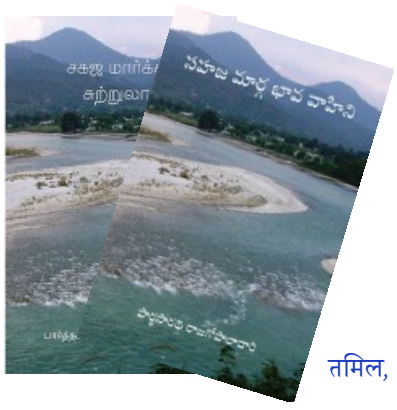

सहज मार्ग के घुमाव
तमिल, तेलुगु, हिन्दी, मराठी, गुजराती, कन्नड़ एवं मलयालम

सत्य का उदय
श्रव्य पुस्तक – मलयालम

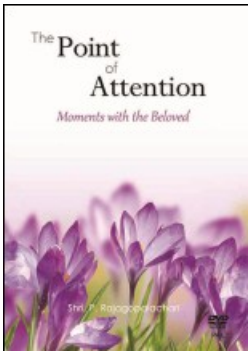

द पॉइंट ऑफ अटेन्शन (मनोयोग का बिन्दु) अंग्रेजी – डी.वी.डी.

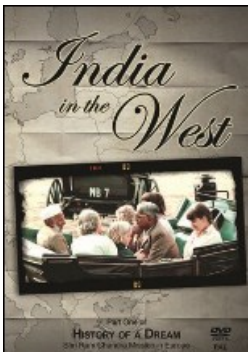

इंडिया इन दी वेस्ट (पश्चिम में भारत) अंग्रेजी – डी.वी.डी.

इन ट्युन विथ नेचर (प्रकृति के साथ अनुकूलन) अंग्रेजी – डी.वी.डी.

नयी नियुक्ति

केंद्र प्रभारी, गोआ

भाई दत्ताप्रसाद विनायक भोंसले

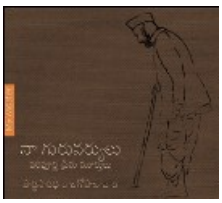

मेरे गुरुदेव
श्रव्य पुस्तक – तेलुगु

सत्य का उदय
श्रव्य पुस्तक – बंगाली

अनंत की ओर
श्रव्य पुस्तक –हिन्दी

केरल ज़ोनल आश्रम, अलुवा

अलुवा में पहला सत्संग, भाई एम.पी. मधुसूदनन के घर में हुआ था। जब अभ्यासियों की संख्या बढ़ गयी तो उनके घर की पहली मंजिल में एक ध्यान कक्ष बनाया गया और उसका २० मई १९९४ को मिशन के पूर्व सचिव भाई. सर्नाडजी द्वारा उद्घाटन किया गया।

गुरुदेव द्वारा केरल का पहला औपचारिक भ्रमण ६ सितंबर १९९५ को हुआ था। अलुवा के महात्मा गांधी म्युनिसिपल टाउन हॉल में एक शानदार समारोह मनाया गया, जिसमें लगभग ८०० अभ्यासी उपस्थित हुए।

१२ जनवरी १९९६ को, गुरुदेव ने निकट के गाँव कडुंगलूर में आश्रम भूमि खरीदने के लिए स्वीकृति दी। एक नीची जगह पर दो एकड़ से अधिक भूमि खरीदी गयी, फ़िर उसे लाल मिट्टी से भरा गया और चहारदीवारी कर गेट लगाया गया। इसका नाम ' सहज ग्रामम' रखा गया। सत्तर सतांश भूमि को मिशन के लिए अलग रखा गया और शेष भूमि को ५ सतांश के भूखण्डों में बाँटा गया। अट्ठाईस अभ्यासियों ने आरंभिक लागत को वहन किया और अब इस परिसर में दस परिवार रहते हैं।

२५ फ़रवरी २००१ को गुरुदेव ने अलुवा केन्द्र के अपने दूसरे भ्रमण के दौरान इस आश्रम का उद्घाटन किया। आश्रम में उस समय सुविधा के तौर पर ५००० वर्ग फ़ुट का एक ध्यान कक्ष, पहली मंजिल के तीनों ओर तीन डॉर्मेटरीज में रहने की व्यवस्था तथा तीसरी मंजिल में दो बड़ी पानी की टंकियाँ थी। गुरुदेव ने मिशन के लिए अभ्यासियों से कुछ भूखण्ड खरीदने का सुझाव दिया और इस प्रकार अब मिशन के पास १.१४ एकड़ ज़मीन है।

प्रकाश का केंद्र

"प्रकृति का पहला और अन्तिम नियम है "मेरा कुछ भी नहीं है", परन्तु यदि मैं दैवीय कृपा के मुझसे होकर बहने हेतु एक वाहक बन जाऊँ तो मैं अविनाशी हो जाऊँगा; क्योंकि अनंतता को एक अनंत वाहक चाहिए जिसके द्वारा वह सदैव बह सके।"

पा. राजगोपालाचारी, ६ सितंबर १९९५, अलुवा

वर्ष २०११ में आश्रम में नवीनीकरण किया गया; सामने के भाग में व्यापक परिवर्तन कर उसे पारम्परिक केरल शैली की बनावट दी गयी (भारी बारिश एवं नमीं से बचाव के लिए), बड़े पैमाने पर इस्पात द्वारा संरचना की गयी और रंगीन अलुमिनियम व मिश्रधातु की शीटों से छत बनायी गयी। यह कार्य वर्ष २०१२ के आरम्भ में खत्म हुआ। मरम्मत के बाद नए आश्रम का वीडियो बनाया गया और गुरुदेव को मणपाक्कम में प्रस्तुत किया गया; जिसे देखकर गुरुदेव ने कहा, "शानदार"।

इस आश्रम में विकेंद्रित भंडारों के उत्सव, ज़ोन स्तर की मीटिंग, प्रशिक्षण कार्यक्रम और प्रशिक्षक गोष्ठी आयोजित की जाती हैं। यह आश्रम अंचलीय लेखा के नोडल केन्द्र के रूप में तथा सभी एस.एच.पी.टी. और एस.आर.सी.एम. के प्रकाशनों के आंचलिक वितरण केंद्र के रूप में भी कार्य करता है। केरल राज्य में मिशन की सारी केंद्रीकृत गतिविधियाँ भी अलुवा से ही संचालित की जाती हैं।

To download or subscribe to this newsletter, please visit http://www.sahajmarg.org/newsletter/india For feedback, suggestions and news articles please send email to in.newsletter@srcm.org
© 2014 Shri Ram Chandra Mission ("SRCM"). All rights reserved. "Shri Ram Chandra Mission", "Sahaj Marg", "SRCM", "Constant Remembrance" and the Mission's Emblem are registered Trademarks of Shri Ram Chandra Mission.This Newsletter is intended exclusively for the members of SRCM. The views expressed in the various articles are provided by various volunteers and are not necessarily those of SRCM.